सं.श्रो.वि./जी.जी.एन./56-83/58382. चूंकि राज्यपाल हरियाणा की राय है कि मैं. उप मण्डल ग्रधिकारी (श्रोप्रेशन) नागल चौधरी जिला महेन्द्रगढ़, के श्रमिक श्री हरि राम तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, प्रव, प्रौद्यौगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए प्रधिसूचना सं 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उस्त प्रधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादप्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनणंय हेतु निर्दिष्ट करते है जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयदा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री हिर राम की सेवाधों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार हैं ?

सं श्री वि. जी एन / 106-83/58389, — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राए है कि मैसर्ज रिवाड़ी टैक्सटाईलज प्रा० लि॰, दिल्ती रोड़, रिवाड़ी, के श्रीमक श्री इन्द्र तिह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीधौगिक विवाद हैं;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायिनगंथ हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते है;

इसलिए, प्रव, प्रोद्यौगिक विवाद प्रिष्ठित्यम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हिस्याणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं.5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए प्रधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदावाद, को विवादपस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिणय हेतु निर्दिष्ट करते है जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा। श्रमिक के वीच या तो विवादपस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री इन्द्र सिंह की सेवाग्नों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं मो वि/जी जी एन /113-83/58409 - चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. पी॰एस॰बी॰ इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्रा॰ जि॰ बारडता रोड़, गुड़गाबा के श्रमिक श्रो बनबारी लाल तथा उसके प्रबन्धकों के बीव इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, बोद्यौगिक विवाद अधिनियम 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपांल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की घारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिणय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री बनवारी लाल की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो वि /जी जी एन /107-83/58423. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. रिवाड़ी टैक्सटाईलज प्रा॰ लि॰, रिवाड़ी, के श्रमिक श्री राम नाथ तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है ;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा () के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15/254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए प्रधिसूचना सं. 11495-जी,श्रम-57/11245, दिनांक

7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राम नाथ की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं भो.वि./जी.जी.एन/54-83/58430. — चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि उप मण्डलअधिकारी (भोप्रेशन) एच एस.ई.बी., नागल चौधरी, जिला महेन्द्रगढ़, के श्रमिक श्री रतन सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद जिल्हित भामले में कोई श्रीदोगिक विवाद है:

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, श्रीद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादप्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला श्रिक्त के लिए निद्धित करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है वा विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है:---

भ्या श्री रतन सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हुकदार है ?

दिनांक, 10 नवम्बर, 1983

सं. श्रो.वि/हिसार/118/83/58944.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. हिसार टैक्सटाईल मिल, हिसारक श्रीमिक श्री राजा प्रसाद तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

इस लिये, श्रम, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई श्रिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं 9641-1श्रम/2/32573, दिनांक 6 नवस्वर 1970 के साथ गठित सरकारी श्रिधिसूचना सं 3864-ए एस.श्रो (ई) श्रम-70/13643, दिनांक 8 मई, 1980 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राजा प्रसाद की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. श्रो.वि /हिसार / 116/83/58950.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. हिसार टैक्सटाईल मिल, हिसार के श्रमिक श्री धन सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है ;

इस लिये, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिवितियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई ग्राक्तियों का प्रयोग करते हुये, हिरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी ग्रिविस्चना सं. 9641-1-श्रम/2/32573, दिनांक 6 तबम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी ग्रिविस्चना सं. 3864-ए.एस.ग्रो. (ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1980 द्वारा उक्त ग्रिवित्यम की धारा 7 के ग्रिवीन गठित श्रम न्यायालय रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री धन सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?